॥ श्री ॥

गौर-पदावली

रचयिता

स्वामी श्री प्रेमानन्दजी महाराज

卐

राधा प्रकाशन, गान्धी नगर, दिल्ली - ३१

* जय गौर *

गौर-पदावली

(श्री चैतन्य-लीला के पदों का संग्रह)

❀

रचयिता

स्वामी श्री प्रेमानन्दजी महाराज

❀

प्रकाशक

राधा प्रकाशन,

९८५-ए, श्यामकुञ्ज, गान्धीनगर,

दिल्ली-३१

विषय-सूची
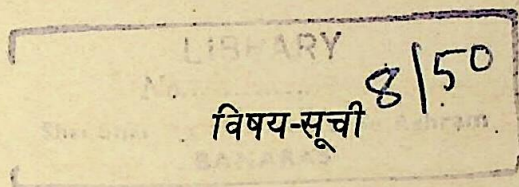
पृष्ठ

१.	नाम-महामन्त्र एवं नाम-ध्वनि	१
२.	नाम-महिमा	२
३.	कृष्ण-कीर्तन	१०
४.	निताई-गौर आरती	१६
५.	गौर-दोहावली	१८
६.	गौर-स्तुति	२०
७.	निताई-गौर-महिमा	२४
८.	विष्णुप्रिया-स्तुति	३३
९.	गौर-जन्म-बधाई	३६
१०.	गौर-बालरूप	४०
११.	वैराग्य	४२
१२.	ब्याहुलौ	४४
१३.	श्रीमधुसूदन-देव स्तुति	४७
१४.	श्री चरण-स्तुति	४८
१५.	गोपीनाथ-स्तुति	४९
१६.	साक्षीगोपाल-स्तुति	५०
१७.	जगन्नाथ-स्तुति	५०
१८.	निताई-निमाई-मिलन	५१
१९.	प्रेम-विरह	५३
२०	निताई-गौर-दया	६१

❖

नाम महामन्त्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

नाम-ध्वनि

श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द ।
हरे कृष्ण हरे राम श्री राधे गोबिन्द ॥

जय शचीनन्दन जय गौर हरि ।
विष्णुप्रिया प्राणधन नदिया विहारी ॥

जय शचीनन्दन गौर गुणाकर ।
प्रेम परस मणि भाव रस सागर ॥

जय भूदेवी विष्णु प्रिया ।
जय गौराङ्गी प्राण प्रिया ॥

हरि · हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।
यादवाय माधवाय केशवाय नमः ।
गोविन्द गोपाल राम श्री मधु सूदनः ॥

नाम महिमा

(१)

जय जय जय हरि नाम, मंगल मय जय हरि नाम ।
बन्देऽहं हरि नाम ॥जय०॥
अगुण सगुण मनन्तं, सुगमं पर सुख सदनं,
प्रत्यक्षं हरि रूपं, स्वयमेकाकारम् ॥जय०॥
भगवद् गुण भण्डारं, भगवद्चरितागारं,
भगवद् दर्शनकारं महिमा अपारम् ॥जय०॥

(२)

जय जय मंगल हरे कृष्ण नाम ।
सुमरन करौं भाव सों, धरौं ध्यान ॥
रसना रस नाहीं सरस करो हे,
श्रवण बधिर खोलि दिब्य धुनि भरो हे,
मंगल करो, अवतरो नाम ॥
हृदय मलिन मंजुल मृदुल करो हे,
जीवन विफल सत्य सुफल करो हे,
सुन्दर करो, अवतरो नाम ॥
कृष्ण रूप लीला उर फुरो हे,
कृष्ण 'प्रेम' जीवन में भरो हे,
आनन्द करो, अवतरो नाम ॥

(३)

जय जय जय हरे कृष्ण नाम ।
मंगलमय सर्वोपरि मंगल, बन्दौं कृष्ण नाम ॥
चित्त दर्पण मार्जनकारी, भव-दावानल-पानकारी ।
श्रय-कुमुदनि-विकसनकारी; विद्या - वधू - प्राणनाथ ॥
आनन्द-सागर-वर्द्धनकारी, प्रति पद अमृतसुखदातारी ।
रोम रोम रस पूरणकारी, विजयते कृष्ण नाम ॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥
महा मन्त्र ये नाम तिहारे, दीन होय हम हीन पुकारे ।
तन मन 'प्रेम' सब तुमपर वारें शरण शरण हरि नाम ॥

(४)

प्रथम मंगल श्री हरि नाम, सर्वोपरि श्री हरि रूप ।
पूजिनाम गणपति भये मंगल, जपि जपि नाम सदा शिव मंगल ।
शेष सहस रसना रटैं मंगल, हरिनाम श्री हरि रूप ॥
वेद पुराण भागवत गीता, भारत रामायण संहिता ।
आदि मध्य अन्त में गीता, हरिनाम श्री हरि रूप ॥
सार शास्त्र को, बीज धर्म को, काल कलि को प्राण वेद को ।
मुक्ति मूल महा साधन 'प्रेम' को, हरि नाम श्री हरि रूप ॥

(५)

हरि ओ राम राम, हरि ओ राम ।
मंगल मंगल श्री हरि नाम, ब्रह्म स्वरूप श्री हरि नाम,
पतित पावन श्री हरिनाम, कलियुग साधन श्री हरि नाम।
राम तो गुप्त हैं प्रगट है नाम, हरि ओ राम०० ॥
जोइ कृष्ण सोइ कृष्ण नाम, एक अभेद हैं नामी नाम।
तौउ कृष्ण सों बड़ोहै नाम, कृष्णतो तजिगये तज्यो नहीं नाम ॥
बन्धु नित्य ऐसो यह नाम—हरि ओ राम०० ॥
शोक मोह को नाशक नाम, ताप पाप को ग्रासक नाम।
जीव स्वरूप विकाशक नाम, कृष्ण स्वरूप प्रकाशक नाम ॥
अन्त सत्य गत्य यही नाम—हरि ओ राम०० ॥३॥
भोग वासना जारक नाम, मुक्ति वासना मारक नाम।
'प्रेम' वासना कारक नाम, तीन लोक को तारक नाम ॥
ऐसो परमोपकारक नाम—हरि ओ राम०० ॥४॥

(६)

हरि हरि हरि हरि नाम जो गावै,
हरि भगवान स्वयं तहाँ आवै ॥
हरि के अंग बसें सब देवा। हरि पद की तीरथ करैं सेवा ॥
हरि गाओ घर बैठे न्हाओ। तन मन के सब मैल बहाओ ॥
हरे कृष्ण०० । हरे राम०० ॥
नाम समान न दान है कोई, नाम समान न ज्ञान है कोई।
नाम समान न यज्ञ है कोई, नाम समान न देव है कोई।
नाम सदा सुख दुःख में गाओ, गाय गाय हरि पदवी पाओ ॥
हरे कृष्ण०० । हरे राम०० ॥

हरि को नाम यह फूल कली है, गावत गावत जाय खिली है।
महक मधुर मादक तब आवै, मन मधुकर तजि विषय रमावै।
रूप धाम लीला तब देखे, जीवन सफल 'प्रेम' करि लेखै॥
हरे कृष्ण०० । हरे राम०० ॥

(७)

कृष्ण नाम हरि नाम बड़इ मधुर ।
जे जन कृष्ण भजे से बड़ो चतुर ॥
कृष्ण नाम भज जीव आर सब मीछे,
पलाइते पथ नाइ, यम आछे पीछे ।
हरि नाम बिने रे गोबिन्द नाम बिने,
विफल मानुष जन्म जाय दिने दिने ॥
भोला मन एक बार भाबो परिणाम ।
भजो कृष्ण कहो कृष्ण लहो कृष्णनाम ।
नाम भजो नाम चिन्तो नाम करो सार ।
नाम बिने कलियुगे गति नहीं आर ॥
जेइ नाम सेइ कृष्ण भजो, निष्ठा करि,
नामेर सहित आछेन आपुन श्रीहरि ॥
राधे कृष्ण रट मन राधेकृष्ण रट ।
वृन्दावन यमुना पुलिन वंशीवट ॥

(८)

हरि बोल हरि हरि बोल हरी ।
फिर देख ले हरि की प्रेम नगरी ।।
मुख नाम रट, मन याद कर, चित चाव धर,
प्राण भाव भर, रट पीउ हरी, प्राण पीउ हरी ।
फिर देख ले हरि की प्रेम नगरी ।।
करताल बजा, पग चाल चला, मन चाल भुला,
जग ख्याल भुला, रट श्याम हरी, घनश्याम हरी ।
फिर देख ले हरि की प्रेम नगरी ।।
कलिकाल महा, यही सार अहा, सब शास्त्र कहा,
सब सन्त लहा, रट नाम हरी, 'प्रेम' धाम हरी ।
फिर देख ले हरि की प्रेम नगरी ।।

(६)

राम कहो कृष्ण कहो भूले बहु बाट गहो ।।
करतल सों देओ ताली, राम कहो कृष्ण कहो ।
पापन की जलै होली, राम कहो० ।।
पंथ चलत मुख जो गावै, राम कहो० ।
पगपग फल यज्ञ पावै, राम कहो० ।।
यम के दूत भाग जात, राम कहो० ।
हरि के दास हिय लगात, राम कहो० ।।

मोह निशा दूर होत, राम कहो० ।
'प्रेम' सूर्य उदय होत, राम कहो० ॥
माया मुख ढकत जात, राम कहो० ।
श्याम मुख लखत जात, राम रहो० ॥

(१०)

हरे कृष्ण हरे राम बोल रे ।
नाम प्रेम धन अर्थ को सार, मिले जो हरि हरि बोल रे ।
नाम प्रेम फलधर्म को सार, चखे जो हरि हरि बोल रे ॥
नाम प्रेम रस काम को सार, पावै जो हरि हरि वोल रे ।
नाम प्रेम पथ मुक्ति को द्वार, खुले जो हरि हरि बोल रे ॥
नाम प्रेमभाव हरि को शृङ्गार, करे जो हरि हरि बोल रे ॥

(११)

हरि बोल हरि बोल हरि गाना ।
खिल खिल जाँय दिल की कलियाँ,
खुल खुल ग्रन्थि जाना ॥
छावै बसन्त औ कूजें कोयलियां, अलियाँ गुञ्ज सुनावै ।
राधाकृष्ण करैं रंग रेलियाँ भरियाँ रसरंग लावैं ॥
प्रेम अमर हो जाना ॥

चेतोदर्पणमार्जनं भवमहादावाग्निनिर्वापणं,
श्रेयःकैरवचन्द्रिकावितरणं विद्यावधूजीवनम् ।
आनन्दाम्बुधिवर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं,
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्तनम् ॥

चेतो दर्पण मार्जनम् :

हरि कीर्तन गंगा यमुना सों बढ़ कर सावन धारा ।
चित दर्पण निर्मल कर देवै, जो कहे वारम्वारा ॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

भव महा दावाग्नि निर्वापणं :

हरि कीर्तन सावन भादों की, रिमझिम रिमझिम धारा ।
भव दावानल सव ही बुझावै, जो कहै वारम्वारा ॥ हरे कृष्ण००॥

श्रेयः कैरव चन्द्रिका वितरणं :

हरि कीर्तन है शरद पूनौंकी अमृत चांदनी धारा ।
मंगल कुमुद कली खिल जावै, जो कहै वारम्वारा ॥ हरे कृष्ण००॥

विद्या वधू जीवनं :

हरि कीर्तन यह प्राण पति है, बरसावै रति धारा ।
विद्या वधू तब ही सुहागिनि, जो कहै वारम्वारा ॥ हरे कृष्ण००॥

आनन्दाम्बुधिबर्धनं पूर्णामृतास्वादनम् :

हरि कीर्तन हिरदै उमगावै, आनन्द सागर धारा ।
पद पद पूर्ण पीयूष पिवावै, जो कहै वारम्वारा ॥ हरे कृष्ण००॥

सर्वात्म स्नपनं :

हरि कीर्तन है काया कल्प कूं दिव्य रसायन धारा ।
मायादास हरिदास बन जावै, जो कहै वारम्वारा ॥ हरे कृष्ण००॥

परं विजयते श्री कृष्ण संकीर्तनम् :

हरि कीर्तन की धूम मची जग, चहुं दिशि नाम धुनि धारा ।
सब साधन सिरमौर 'प्रेम' यह, जो कहै वारम्वारा ॥हरे कृष्ण००॥

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना ।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ॥

हरिनाम कीर्तन सबही करो, इस में सबका अधिकार सही ।
पर कृष्ण प्रेम की चाह करो, तो तीन बात भी करो सही ॥

तृणादपि सुनीचेन :

पहले तो अपने को समझो, मैं तो कुछ भी हूँ ही नहीं ।
तिनका भी मुझसे बेहतर है, मैं तिनका से भी बुरा सही ॥
यह अहंकार यह मैं मैं ही, सब अपराधों का मूल सही ।
इस मैं को मिटाने ही के लिये, तिनका जैसा बन जाओ सही ॥

तरोरपि सहिष्णुना :

जो कुछ बीते सहो खुशी से, जैसे सहते वृक्ष मही ।
सुख दुःख हानि लाभ सभी को, समझो हरि की मौज सही ॥
सुखही मिले हमें दुख न मिले, यह चाह है दिलमें जबतक कहीं ।
तब तक कीर्तन भजन किसीका, होगा नहीं निष्काम सही ॥
अपनी चाह पड़े चूल्हे में, प्यारे की चाह ही चाह सही ।
इसी लिये प्यारे तुम सीखो, वृक्षों से यह पाठ सही ॥

जब चाह मिटी निष्काम हुए, अहंकार मिटा अपराध नहीं।
तभी दीनता सच्ची गरीबी, पद पद में झलकेगी सही॥

अमानिना मानदेन :

तब आप वह मान से दूर रहे, और औरों को देगा मान वही।
जब ऐसा बन कर करेगा कीर्तन, रीझ मिलैं हरि 'प्रेम' सही॥

कृष्ण कीर्तन

(१२)

भज गोपालं दीनदयालं, बचन रसालं ताप हरं।
सुन्दर बनमालं, नयन विशालं रूप रसालं चित्त हरं॥
बारिज बदनं लज्जित मदनं आनन्द सदनं प्रेम धरं।
मोहन घनश्यामं नयनाभिरामं लावण्य धामं चन्द्र वरं॥
मोहन लीलं करुणाशीलं रस घन नीलं धाम परं।
वेणु प्रवीणं नित्य नवीनं प्रिय जन दीनं देव परं॥

(१३)

श्रवण मंगलं कथन नंगलं चरित मंगलं ध्यान मंगलम्।
स्मरण मंगलं सर्व मंगलं नौमि तं प्रभुं कृष्ण मंगलम्॥
इन्दिरावरं गोपिकावरं राधिकावरं रुक्मिणीवरम्।
श्रीमतांवरं श्यामसुन्दरं नौमि तं प्रभुं कृष्ण मंगलम्॥
दीनवत्सलं भक्तवत्सलं धर्मवत्सलं धेनुवत्सलम्।
विप्रवत्सलं वेदवत्सलं नौमि तं प्रभुं कृष्ण मंगलम्॥

(१४)

मधुर सुमंगल नाम कहो मुख ध्यान धरो हिय सुखदाई ॥
(हरे कृष्ण गोविन्द राम नारायण केशव कलिमलहारी ।
हाँ मोहन मुरली धारी हाँ श्याम गिरवर धारी ।)
पीत बसन तन नील सुघन छवि, बनमाला जु सुहाई ।
अंग त्रिभंग ललित मनमोहन मुकुट लटक छवि छाई ॥
हरे कृष्ण गोविन्द राम नारायण केशव कलिमलहारी ।
भाल तिलक कुंकुम खौर चन्दन कुण्डल विमल सुहाई ॥
अलक कपोलन मधु मृदु मुसकन, मधुर मधुर अति माई ।
हरे कृष्ण गोविन्द राम नारायण केशव कलिमलहारी ॥
गोपी गोप गौअन मधि राजत, गोकुल चन्द कन्हाई ।
मन्द मधुर मुरली मुख बाजत, आनन्द प्रेम रसदाई ॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

(१५)

गोविन्द गोपाल गिरिवर धारी ।
यमुना के नीरे तीरे धेनु चरावे, ओढ़ फिरै वह कामरी कारी ॥
यशोदा मैया वाकूं माखन खवावैं, गोपी पिवावैं वाकूं नौन मठारी ।
नन्द बाबा वाकूं काँध चढ़ावें, दाउ दादा वाकी करैं रखवारी ॥
गोपन को वह लाल कन्हैया, गोपिन को वह रास विहारी ।
ब्रह्मा शिव वाकी अस्तुति गावें, ब्रजवासी गावें वाकूं 'प्रेम' की गारी ॥

(१६)

जय जय मुकुन्द सुखमय मुकुन्द, चिन्मय मुकुन्द निर्भय मुकुन्द ।
हरि हरि मुकुन्द नरहरि मुकुन्द, माधव मुकुन्द केशव मुकुन्द ॥
पय हर मुकुन्द दाधहर मुकुन्द, मनहर मुकुन्द भवहर मुकुन्द ।
अघहर मुकुन्द चक्रहर मुकुन्द, मदहर मुकुन्द भयहर मुकुन्द ॥

(१७)

हरि हरि हरि हरि मेरो आधारा ।
हरि हरि हरि हरि सुखन को सारा ॥
हरि हरि हरि हरि मेरो सिङ्गारा ।
व्यास कृपण के हरि भण्डारा ॥
श्याम ही अंजन श्याम ही मंजन श्याम ही चन्दन कर ले ।
श्याम ही चोली श्याम चूँदरी ओढ़ श्याम सौं मिल ले ॥
हरि हरि हरि हरि मेरो सिङ्गारा ॥
श्याम नाम धन जोरि जोरि के श्याम महल तू रच ले ।
श्याम 'प्रेम' सिंहासन ऊपर श्याम की पूजा करले ॥
हरि हरि हरि हरि मेरो आधारा ।

(८१)

जय माधव मदन गोपाल, जय मुरलीधर नन्दलाल ।
जय राधा कान्त कृपाल, जय मोहन गोपी ग्वाल ।।
नयन विशाला, गले बनमाला, चरनन नूपुर बाजे रसाला ।
चाल चले जब लाजे मराला, पीताम्बर तन श्याम तमाला ।।
बनमाला पहरे पचरंगी, कटि कछनी काछे बहुरंगी ।
मुरली बजावै ललितत्रिभंगी राधा राधा राधा नामरसाल ।।
गोकुल में वह पलना झुलैया, नन्दगाँव में गाय चरैया ।
वृन्दावन में रास रचैया, गोपीजनवल्लभ मोहनलाल ।।
व्रजमोहन सोहन व्रजचन्दा व्रज नागर नटखट नन्दनन्दा ।
व्रज जीवन व्रज आनन्दकन्दा, नयनमणि 'प्रेम' कंठमाल ।।

(१६)

जय राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे गोविन्द ।
मधुर गोकुलचन्द नन्द को लाल, श्री वृन्दावन चन्द ।।
मुरलीधर मधुसूदन माधव, गोपीनाथ मुकन्द ।
केलि कलानिधि कुञ्जबिहारी, गिरिधर आनन्दकन्द ।।
व्रजनागर व्रजराज सुनन्दन, व्रज जन नयनानन्द ।
राधा रमण रसिक रस शेखर, रसमय मुसकन मन्द ।।
गोप गोपाल गोपीजनवल्लभ, गोकुल परमानन्द ।
दासगोपाल आस करुणामय, केशव पद मकरन्द ।।

(२०)

सुन्दर श्याम बंसुरिया वारे, मीठी सी तान तू आकर सुनारे ॥
चलीं यमुना को गोपी भोर, चितवत चहूँ चित चोर ।
मनावैं मन ही मन में मोहन लला रे ॥ मीठी० ॥
लै लैकें घट पनघट को, लाईं माखन हम तेरे बट को ।
अब आकर के झटपट ओ नटखट तू खा रे ॥ मीठी० ॥
तारे गिन गिन कै रैन बितानी, अंखियाँ दरसन को लाल तरसानी ।
अब हँस हँस के अमृत रस प्रेम पिला रे ॥ मीठी० ॥

(२१)

हरे कृष्ण गोविन्द गोपाल गिरिधारी रे ॥
देवकी ने जायो पै यशोदा ने बधायो पायो ।
गोद खिलायौ व नचायौ दै दै तारी रे ॥
पूतना कौ पय पीयौ, धाई माता मान लियौ ।
कुल समेत वाकी मुक्ति कर डारी रे ॥
मटुकिया फोरी मात ऊखल से बाँधे जोरी ।
बंध कर यमलार्जुन को उद्धारी रे ॥
शिव नाचै आंगन में, ब्रह्मा लोटे पाँयन में ।
गोपी 'प्रेम' गावैं गारी चोर लबारी रे ॥

(२२)

कान्हर कारो नन्द दुलारो, मो नैनन को तारो री।
प्राण पियारो जग उजियारो, मोहन मीत हमारो री॥
दृग में राजत हिय में छाजत, एक छिना नहीं न्यारो री।
मुरली टेर सुनावत निशि दिन, रूप अनुपम वारो री॥
चरण कमल मकरन्द लुब्ध ह्वै मन मधुकर गुञ्जारो री।
रस रंग केलि छबीले प्रभु संग, हित सों सदा विहारो री॥

(२३)

मनमोहन मुरलीधारी जय माधव मुकुन्द मुरारी॥
श्री गोविन्द गिरिवरधारी, गोपाल गोपीमनहारी।
व्रज गोधन पालनकारी, जय माधव मुकुन्द मुरारी॥
गोपी नवनीत अहारी, गोपी-जन-चोर-अपहारी।
गोपी-जन-रासविहारी, जय मांधव मुकुन्द मुरारी॥
गोपेश अजिर विहारी, गोपीश्वर कृपा कारी।
गोपीश्वरी 'प्रेम' भिखारी, जय माधव मुकुन्द मुरारी॥

(२४)

बोल बोल बोल राधाकृष्ण बोल ।
डोल डोल डोल राधाकृष्ण डोल ।।
बाम अंग श्याम संग, राधा झूलें डोल ।
नील मणि हेम छवि, शोभा नहीं तोल ।।
फूल फूलें भमर गावैं, नाचैं मोरनी मोर ।
यमुना जल ढलमल करि, चूमें चरण कोर ।।
लाल राग लाल भाग, लाल वृन्दावन सुहाग,
लाड़िली लाल, झूलैं 'प्रेम' डोल ।।

निताई गौर आरती

(२५)

आरती नदियाबिहारी की, संकीर्तन रासबिहारी की।
कनक सम गौर अङ्ग सोहै, वदन हरि नाम मधुर मोहै।
भुवन मङ्गल पावन जो है, विश्वम्भर गौर बिहारी की।
संकीर्तन रासबिहारी की ।।
सदा उर भाव महा धारें, चलत नैनन सों रस धारें ।
सुवाहु विशाल, गरे बनमाल, मधुर छविजाल,
श्री विष्णुप्रियाबिहारी की, संकीर्तन० ।।

दाहिने राम निमाई दयाल, गदाधर बायें भाव रसाल,
अद्वैत श्रीवास, भक्त ओर पास, सेवत सुख राश।
आश शचीसुत सुखकारी की, संकीर्तन० ॥
हरि हरि धुन मंगल छाई, खोल करताल ओ शहनाई।
कटें भव फन्द, मिटें कलि द्वन्द, भजो गौर चन्द,
हाँ जय जय प्रेम अवतारी की, संकीर्तन० ॥

(२६)

ॐ जय जय गौर हरी।
नित्यानन्द दयाल भक्त भेष हरी ॥
ब्रज-लीला पूरन हित गौरा रूप धरी।
आये राधा-माधव एकै देह करी ॥
साधन हीन मलीन लखि कलि जीव हरी।
आपहु तजि संसारहिं भये सन्यासी हरी ॥
ईश्वरताई छिपाई कहु प्रगटाई हरी।
लीला नर ईश्वर की मधुर रचाई हरी ॥
पहले पापिन तारें दोष न देखें हरी।
मारन हू जो आवें उनसों बुलावें हरी ॥
दया क्षमा गुण धाम 'प्रेम' रस धाम हरी।
तुम सम तुम ही निताई गौर श्याम हरी ॥

गौर दोहावली

कलियुग में कीर्तन हरि, यही कृष्ण को रास।
श्याम ही गौरा रूप में, वाके देव हैं खास॥

सखा भईं सखियाँ सकल, निज निज रूप दुराय।
श्याम हू ढकि तन श्यामता, बन गये गौरा राय॥

रास ठौर कीर्तन रच्यो, मुरली हरि धुनि गाय।
युगल एक बन गौर हरि, दियो प्रेम लुटाय॥

जो गौर सोइ श्याम है, जोइ श्याम सो गौर।
राधा कृष्ण दोऊ मिलि, भये गौर इक ठौर॥

बाहर सों जो गौर हैं, भीतर कृष्ण स्वरूप।
कलि में कीर्तन यज्ञ सौं, भजहु कृष्ण अनूप॥

'गो' अक्षर गोविन्द सों, राधा सों लिया 'रा'।
दोउ मिलि एकै जब भये, नाम पर्यो गोरा॥

भाव राधिका माधुरी, आस्वादन सुख काज।
जयति कृष्ण चैतन्य जय, कलि प्रगटे ब्रजराज॥

ब्रज के तुम गोपाल हो, नदिया निमाई लाल।
भक्तन के उर माल हो, जय जय जय शचि लाल॥

कौशल्या के राम हो, यशुमति के जु कन्हाई ।
शचि के सोइ निमाई तुम, बसो सदा उर आई ।।

जो न दियो प्रेम और युग, ताहि दैन कलि काल ।
गौरा बनि श्रीकृष्ण ही, प्रगटे दीन दयाल ।।

ज्ञान ध्यान सब कछु गयो, भक्ति हू चली जात ।
गौरा होय श्रीकृष्ण जो, हरि हरि बोल न गात ।।

भक्ति कूं जीवन दियो, कियो प्रेम प्रकाश ।
पापिन कूं उर हार कियौ, दियो कीर्तन रास ।।

भाव मय और रसमय, करुणा के आगार ।
जय शचिनन्दन गौरहरि, विष्णुप्रिया उर हार ।।

गो गो कहि उन्मत्त जे, गौरा कह्यौ न जाय ।
ऐसे प्रभु निताई के, नित ही वन्दों पाय ।।

कलि प्रगटायो कृष्ण जिन, सीतापति हर ईश ।
जयति जयति अद्वैत प्रभु, देओ पद रज शीश ।।

गौर प्रेम स्वरूप हैं, आनन्द रूप निताई ।
चहो प्रेम आनन्द तो, भजहु दोनों भाई ।।

गौर स्तुति

(२७)

जय नन्दनन्दन गोपीजनवल्लभ राधानायक नागर श्याम ।
सोई शचीनन्दन नदिया पुरन्दर, सुर मुनि गण मनमोहन धाम ॥
जय निज कान्ता कान्ति कलेवर, जय जय प्रेयसी भाव विनोद ।
जय ब्रज सहचरि लोचन मंगल, जय नदिया वधु नयन आमोद ॥
जय जय दाम श्रीदाम सुवल सखा, प्रेम प्रवर्द्धन नव घन रूप ।
जय रामादि सुन्दर सहचर, जय जय मोहन गौरअनूप ॥
जय अतिवल वलराम प्रिया भुज, जय जय नित्यानन्द आनन्द ।
जय जय सज्जन गण भय भंजन, 'गोविन्ददास' आश अमंद ॥

(२८)

जय गौर हरि जय गौर हरि जय गौर हरि ॥
कीर्तनकारी नदिया विहारी स्वयं अवतारी गौर हरि ।
भावरसधारी पतित उधारी भव दुःख हारी गौर हरि ॥
रूप रसाला नयन विशाला परम कृपाला गौर हरि ।
दीन दयाला प्रणतपाला कलिमल काला गौर हरि ॥
दया अपारा परम उदारा पतित आधारा गौर हरि ।
गुण आगारा रूप भंडारा भाव रस सारा गौर हरि ॥
नाथ अनाथा लक्ष्मीनाथा कन्थानाथा गौर हरि ।
श्री जगन्नाथा चल जगन्नाथा सुत जगन्नाथा गौर हरि ॥
जगदानन्द वर नित्यानन्द वर विष्णुप्रिया वर गौर हरि ।
ब्रह्मानन्दधर प्रेमानन्दकर अद्वैतानन्द गौर हरि ॥

(२९)

श्री गौर चन्द्र कृपालु भज मन सकल कलि कल्मष हरं।
श्रीकृष्ण नाम औ प्रेम दाता कृष्ण चैतन्य हरि परं॥
पीत अङ्गन पीत भूषण पीत सूत्र पट धरं।
पीत माला पीत नूपुर पीत कान्ति कलेवरम्॥
ललित वलित बाहु ऊर्ध्व विशाल वक्ष परिसरं।
मधुर मनहर भुवन मङ्गल, नित्य कमनीयकरं॥
नयन नीरज नवल नित्य नेह रस करुणाभरं।
बोल हरि हरि बोल गद् गद् नाम हरि मंगलकरं॥
पतित पापी खल सुरापी यवन म्लेच्छ मनहरं।
परम करुणा पर उदारता क्षमा शान्ति उर धरं॥
दीन कारण दीन बन्धु दीनानाथ हरि स्वयं।
दीन भेष भाव वरि सन्यासी रूप नामधरं॥
वृन्दावन रस प्रेम माधुरी सार साध्य परतरं।
बास ब्रज हरि नाम साधन दाता गौरसुन्दरं॥
हठ बाद तजि सत भाव धरि जे सुनैं गावैं गौर हरि।
ते पावें निश्चय राधा-कृष्ण 'प्रेम' पावन दुर्लभम्॥

(३०)

जय नटवर सुरवर गौर निताई वर करुणाकर केशव भूतल पर,
प्रगटे कलिमें भक्त- भेष धर॥
रूप मदनहर नयन जलदधर चरण नृत्यपर वाहुऊर्ध्व कर।
धरणिधन्यकर हरिकीर्तनपर कालियकामसिर नामचरणधर॥
पीताम्बरधर नीलाम्बरधर अरुणाम्बरधर मत्तदिगम्बर।
प्रेमरससागर नित्यानन्दनधर विश्वम्भर वर विश्वम्भरधर॥
नामतरणिकर जगतसरणिहर अगतिन गतिवर प्रेम करुणाकर।
पतितन बलकर कलियुग वलहर रामनिताई कृष्णचैतन्यवर॥

(३१)

जय हे जय हे जय शचिनन्दन जय हे ।।
जय कलिगंजन जन दुःख भंजन आनन्दकारी जय हे ।
जयविश्वम्भर विश्व क्षेमकर नदियाविहारी जय हे ।।
भक्तभेष धर भक्त भाव धर गौरावतारी जय हे ।
विद्या प्रमोदी नाम विनोदी कीर्तनकारी जय हे ।।
जय जित रोषा करुणा कोषा पतितोद्धारी जय हे ।
जय रस सागर भावमहाधर प्रेमावतारी जय हे ।।

(३२)

जय जय गौर हरि भाव रस सागर ।
उठें प्रेम लहर जामें मधुर मधुर तर ।।
जय जय गौर हरि हिमालय शेखर ।
वहै प्रेम गङ्ग जासों त्रिविध ताप हर ।।
जय जय गौर हरि निष्कलंक हिमकर ।
झरैं हरि नाम सुधा शीतल सुखकर ।।
जय जय गौर हरि प्रेम कल्पतरुवर ।
शरण हरत दुःख सब बाञ्छा पूरनकर ।।
जय जय गौर हरि अद्भुत रस बादर ।
बरषै नित प्रेम धार सरसत चराचर ।।
जय जय गौर हरि 'प्रेम' परस मणिवर ।
लोह हृदय करै कंचन सकल कलुष हर ।।

(३३)

जय गौर हरिं जय गौर हरिं जय गौर हरिं भज गौर हरिम्।
मुख पंकज लज्जित चन्द्र कुलं,
अरुणाधर निन्दित बिम्ब फलं,
दशनोज्ज्वल हीरक कान्ति हरं, जय गौर हरिं०॥
नव मालती दाम सुबुद्ध कचं,
मणि कुण्डल मण्डित कर्ण युगं,
वृषभानुसुतोदित भाव धरं, जय गौर हरिं०॥
जित फुल्लित पंकज नेत्र युगं,
नयनाश्रु झराप्लुत गंड तटं,
हरि कीर्तन नर्तन मोद परं, जय गौर हरिं० ॥

(३४)

जय नन्दनन्दन गोकुलानन्दन कृष्ण गोविन्द जय हरे।
सोइ शचिनन्दन नदियानन्दन कृष्ण चैतन्य जय हरे॥
जय असुरारी असुसंहारी हतारिगतिप्रद जय हरे।
सोइ अघहारी अभयकारी परम प्रेमद जय हरे॥
जय वंशीधारी रासबिहारी, गोपीजनवल्लभ जय हरे।
सोई नामकारी कीर्तनबिहारी पापीजनबल्लभ जय हरे॥
जय श्यामसुन्दर अखिलमनहर आनन्दकारी जय हरे।
सोइ गौरसुन्दर परमोदार वर प्रेमदातारी जय हरे॥

निताई गौर महिमा

(३५)

जयति जय गौर देव नमो बार बार ।
उदित नदिया उदयाचल, कलि पावन अवतार ।।
अद्वैत आना गोलोक धन, नरहरि प्रेष्ठ प्राणजन ।
स्वरूप प्रिय निताई सखा, सनातन जीवाधार ।।
रूप हृदय नित बिहारी, लक्ष्मी प्राणपति सुखारी ।
गदाधर उर रसोल्लासी, विष्णुप्रिया उर हार ।।
जगन्नाथ सुत निमाई, श्रीवास सदा सहाइ ।
साङ्गोपाङ्ग पार्षद् संग, करो 'प्रेम' प्रचार ।।

(३६)

जय जय जय गौर देव, कल पावनावतार ।।
उज्वल कनक वरन अंग, अंग अंग भाव तरंग ।
रंग रंग नव तरंग, नमो नमो बार बार ।।
नयन कमल सरस धार, भूषण नव रस विकार ।
गति विलास नृत्यकार, नमो नमो बारबार ।।
अधम पतित प्रति ढरन, कण्ठ लाय अभय करन ।
अभूत भूत करुणाकरन, नमो 'प्रेम' बार बार ।।

(३७)

जयति जय गौर निताई बलि बलि बलि जाई।
काम कोटि रूप धाम चन्द्र कोटि सुधा धाम।
मातृ कोटि क्षमा धाम दया धाम भाई॥
कोटि कल्प तरु उदार गहन सिन्धु कोटि धार।
भाव कोटि पारावार रस आगार गाई॥
कोटि करि सम हुँकार कलि कोटि तर्जनहार।
देव कोटि कोटि बार 'प्रेम' नमें सदाई॥

(३८)

हरि नाम लुटाने वाले, (हरि प्रेम लुटाने वाले)
जय गौर हरि जय गौर हरि॥
तब मुरली मधुर बजाई, कोई गोपी ही सुन पाई,
अब कण्ठ से हरिधुनि गाई, सब दुनियाँ ने सुन पाई,
सोतों को जगाने वाले-जय गौर० ॥
तब आधी रात बजाई, छिप कर के बन में गाई,
अब तो दिन रात सदाही, घर घर में धुनि पहुँचाई,
नाम यज्ञ रचाने वाले-जय गौर ०॥
तब गोपिन चीर चुराये, देह के सब धर्म छुड़ाये,
अब पापिन पाप चुराये, भुज भरि भरि के उर लाये,
रस प्रेम पिलाने वाले-जय गौर ०॥

(३९)

पापिन काज पधारे गौरा, पतितन काज पधारे ।
पतितन काज पधारे, दीनन काज पधारे ॥
दरशन पाप औ ताप हरत है, अद्भुत रूप छटा रे ।
परसत रोम रोम हरषत है, उमड़त प्रेम घटा रे ॥
गावत हरि हरि हिय सों लावत, राखत चरण तटा रे ।
नमन करत दुःख गमन करत है, भागत यम के भटारे ॥
भजहु भजहु सो गौरचन्द्र प्रभो, चढ़ि हौ प्रेम अटारे ।
जय जय राधाकृष्ण मिलित तनु, गौर औ श्याम नटारे ॥

(४०)

बनि आये हैं मल्लाह आप हरि ।
बहते देख जीवों को कलि में, ले आये हैं नैया आप हरि,
निज नाम की नैया आप हरि, बनि० ॥
नैया भी आप, खिवैया भी आप, बाँह गहैया भी आप हरि,
उठाओ, बैठाओ, लेजाओ पार आप बनि० ॥
हरि संकीर्तन भेरी बजाई, देश देश खबर पहुँचाई,
भाग सकेना, कोई बचेना, कीर्तन सेना, 'प्रेम' की सेना,
घेरें औ टेरें औ पैयां परें, कहें आये हैं मल्लाह आप हरि,
बनि आये हैं मल्लाह आप हरी ॥

(४१)

क्या धूम मचादी है तूने, ऐ नदिया नागर गौर लला ।
हरिबोल हरिबोल कह नचाया जगत ऐ नदिया नागर ० ॥
कोई रूप के तेरे घायल हैं, स्वरूप से कोई कायल हैं ।
कोई गुण के तेरे गायल हैं, ऐ नदिया नागर ० ॥
तेरे सोने के नूपुर पायल हैं, जहाँ प्राण मेरे लिपटायल हैं ।
तेरे नैंना रस बरसायल हैं, ऐ नदिया नागर ० ॥
भुज दंड मृणाल उठायल हैं, हेम वक्ष विशाल बढ़ायल है ।
उर पापी तापी लगायल हैं, ऐ नदिया नागर ० ॥
तुम आप नचे औ नचायलहो, तुम आप छके औ छकायलहो,
"प्रेमानन्द" लुटे औ लुटायल हो, ऐ नदिया नागर ० ॥

(४२)

महा प्रभु तुम समान कौन उदार ।
मारन हार कूँ हार करौ उर, दान करो भण्डार ॥
अपनावन पापी तापी जन, तजि गृह सुख संसार ।
अपनो नाम हरि गाय सुनायो, दियो पतितन आधार ॥
सतयुग त्रेता द्वापर माँहि, जाको न खोल्यो द्वार ।
मधुर सो रस वृन्दावन माधुरी, कलिमें तुम दातार ॥
हरि रस मदिरा पान करायो, कृपा सु कोर निहार ।
मेरी बेर बात कित लाये, परचो 'प्रेम' दुःख भार ॥

(४३)

निताई निमाई दोउ प्रेम के अवतार हैं।
रूप गुण लीला इनकी पावै कौन पार है ॥
गोकुल विहार तजि नदिया में अवतरी।
राम कृष्ण दोउ करें लीला मनोहार हैं ॥
ऐसो अवतार कहूँ सुन्यो नहीं पढ्यो है।
पातकी उद्धार किये जाय द्वार द्वार है ॥
कौन अवतार हरि माँग्यो पाप पापिन सों।
मारन हारेन को कियो कौन उर हार है ॥
कलि के सताये सब साधन नसाये को।
'प्रेम' प्रभु गौर दियो नाम को आधार है ॥

(४४)

रंग ले प्यारे रंग ले चोला गौर हरि रंग लाये हैं ॥
जो रंग नहीं राज महल में, जो रंग नहीं गिरि जंगल में,
जो रंग नहीं है पंडित दल में,
सो रंग देन रंग रंगीले, गौर हरि मेरे आये हैं ॥
जो रंग नहीं है देव लोक में, जो रंग नहीं है सिद्धलोक में,
जो रंग नहीं है ब्रह्म लोक में,
सो रंग देन रंगीलो व्रज को, श्याम गौर बनि आये हैं ॥
पापी कहाँ हो पाप ले आओ, हृदय में संताप ले आओ,
जिह्वा में हरि नाम ले आओ,
बोलो 'प्रेम' से हरि रंगीले, गौर श्याम अब आये हैं ॥

(४५)

अवतार नीको गौरा कलि में अवतार ।
गौर रूपको छदम बनायो; आयो श्याम चोरा ।।
(चाँद नाचैं सूरज नाचैं और नाचैं तारा)
अवतार नीको गौरा कलि में अवतार ।।
व्रज में प्रेमी प्रेमी नाचें, यहाँ तो पापी चोरा ।
जगाइ मधाइ जैसे नाचें, गाय हरि हरि गौरा ।।
अवतार नीको गौरा कलि में अवतार ।।
बाट चलत बटोही नाचें, खेलत नाचें छोरा ।
माल मोलते गाहक नाचें, गाय हरि हरि गौरा ।।
अवतार नीको गौरा कलि में अवतार ।।
जननी गोद में दूध पीमते, नाचें बालक छोरा ।
पति संग सोवति कुलवाला, गावैं हरि हरि गौरा ।।
अवतार नीको गौरा कलि में अवतार ।।
नाचें कोई हैं गावैं कोई, जाने ना निशि भोरा ।
नदिया नगर में नदी 'प्रेम' की, बहाय दई गौरा ।।

(४६)

बड़ोई दयाल मेरो नित्यानन्द राय रे।
गरीबनिबाज मेरो नित्यानन्द राय रे॥
घर घर प्रेम धन जाय कै लुटाय रे।
तारे पापी तापी जन हरि बुलवाय रे॥
डग मग पग धरे प्रेम भर भार रे।
मानो मदमाते मतवारो करिवर रे॥
छिन छिन रोवै और छिन छिन हाँसे रे।
गो-गो-गौरा कहैं आनन्द में भासे रे॥
कृपा सिन्धु दीन बन्धु निताई दयाल रे।
अगतिन गति प्रेमदाता दीन प्रतिपाल रे॥

(४७)

गौरा गा जइयो मधुर मधुर हरि नाम॥
सोय रहे हम नींद में भारी, सपने के सुख में ही सुखारी,
टेरि सुटेरि जगा जइयो मधुर मधुर हरि नाम॥
रात अँधेरी डर है भारी, छोड़ न दीजो जगाय मुरारी,
दीप दिखाय लिवा जइयो मधुर मधुर हरि नाम॥
जाना दूर है दम तो नहीं है, राह खर्च कूँ दाम नहीं हैं,
दम और दाम दिवा जइयो मधुर मधुर हरि नाम॥

मारग में दरिया है भारी, काठ की नैया चलै न तहाँ री,
नैया कृपा की लै अइयो, मधुर मधुर हरि नाम ।।
बहुत दिनन सों आस लगी है, हृदय प्रेम की प्यास जगी है,
अपने ही हाथ पिवा जइयो मधुर मधुर हरि नाम ।।

(४८)

आयो कलि पावन हरि गौर, सुनायो नाम हरि हरि बोल ।
नदिया में अवतार लियो है, हरि कीर्तन प्रचार कियो है ।
कलि युग में आधार दियो है, गौर निताई हरि बोल ।।
आप नचै और जगत नचाये, नाम संकीर्तन रास रचाये ।
कलि कीलन को मंत्र सुनाये, गौर निताई हरि बोल ।।
भक्तन कूं गिन गिन के नचाये, पापिन कूं चुन चुन के नचाये ।
नीचन कूं नम नम के नचाये, गौर निताई हरि बोल ।।
घर भीतर के लोग नचाये, बन भीतर के बाघ नचाये ।
मठ भीतर के बाबा नचाये, गौर निताई हरि बोल ।।
दिग्विजयी कूं दीन बनायो, काजी यवन कूं दास बनायो ।
जगाई मधाई गरे लगायो, गौर निताई हरि बोल ।।
नाम संकीर्तन यज्ञ रचायो, राधा भाव औ प्रेम लखायो ।
'प्रेम को मूल नाम बतायो, गौर निताई हरि बोल ।।

(४६)

जयति जयति जयति जयति जयति जयति निताई गौर हरी ॥
कलियुग पावन नाम बुलावन भक्ति प्रचारन प्रेम प्रकाशन।
धारि धारि धारि दया दया दया हरि अवतारी ॥
राम रूप में रावण मारचो कृष्ण रूप में कंस पछारचो,
गौर रूप में भुज पसारचो।
हिरदै हिरदै हिरदै, पापी पापी पापी जन गन धरी ॥
राम रूप में राज्य करै हैं कृष्ण रूप में रास रचै हैं,
गौर रूप में न्यास करै हैं।
जीव जीव जीव दुःख दुःख दुःख लखि कै हरी ॥
राम रूप में भक्ति सिखावैं, कृष्ण रूप में प्रेम बढ़ावैं,
गौर रूप में नाम लुटावैं।
डोल डोल डोल, बोल बोल बोल हरि हरि हरी ॥
अवध में तुम सीता राम, बृन्दावन में राधा श्याम,
नदिया में मिलि दोउ नाम।
एक एक एक, गौर गौर गौर चैतन्य हरी ॥
काहु को बाराह रूप लखायो, नृसिंह रूप कहूँ प्रगटायो,
षडभुज रूप कहूँ दरसायो।
धन्य धन्य धन्य, पूर्ण पूर्ण पूर्ण प्रेम हरी ॥

✧

विष्णुप्रिया स्तुति

(५०)

जय जय जय विष्णुप्रिया, चिन्मयी प्रेमदात्री ।।
गौरप्रिया जीवाश्रया, पापी तापी त्रात्री ।
वत्सला सर्वमंगला, प्रेममयी मात्री ।।
कनकबदना नीलवसना भू देवी वर दात्री ।
सनातन महामाया सुता, गौर रति पात्री ।।
त्यागदेवी नेहदेवी, करुणामयी धात्री ।
चरण कमल शीश धरहु, करहु 'प्रेम' पात्री ।।

(५१)

जय जगजननी भवभयहरनी मनुज रूप सुधारिणी ।
विश्व मोहिनी विश्व वन्दनी, विश्व लीला विहारिणी ।।
जय सुकेशा चारु वेशा, नीलवस्त्रा सुहासिनी ।
कम्बुकण्ठी कुन्ददन्ती, शरदचन्द्र निभाननी ।।
जय गौराङ्गिनी, गौरार्द्धाङ्गिनी, गौर लीला धारिणी ।
विष्णुप्रिया लक्ष्मीप्रिया, देवी भू अवतारिणी ।।
जय महा माया सुता महा-माया शक्ति रूपिणी ।
श्री सनातननन्दिनी ब्रह्म सनातन नन्दिनी ।।
जया दयामयी जय क्षमा मयी, त्यागमयी अह्लादिनी ।
चिद्आनन्द मयी गौरानन्दमयी 'प्रेम' भक्ति प्रदायिनी ।।

(५२)

जय जय नवद्वीप धाम बलिहारियाँ।
नवधा भक्ति की नव नव क्यारियाँ॥
अवध में राम भये, मिथिला में सीता भई।
यहाँ तेरी गोदी में तो दोनों अवतारियाँ॥
गोकुल में कान्ह भये, रावल में राधा भई।
यहां तेरी गोदी में तो दोनों अवतारियाँ॥
अवध में राम खेले, मिथिला में सीता खेलीं।
यहां तेरी गोदी में तो दोनों ही विहारियाँ॥
नन्दगांव कान्ह खेले, बरसाने राधा खेलीं।
यहां तेरी गोदी में तो दोनों ही विहारियाँ॥
यहां पलना में झूलें, यहीं पैयां पैयां चालैं।
यहीं ब्याह सगाई दोनों यहीं ससुरारियाँ॥
नाम नवद्वीप लेवें, नवधा सो भक्ति पावें।
'प्रेम' भक्ति हिये में वहे जु शतधारियाँ॥

(५३)

आनन्द आनन्द छायो जगत में, जगजननी स्वामिनी आई।
जननी स्वामिनी आई, विष्णुप्रिया महारानी आई॥
फूले सरसों फूल बसन्ती, फूले आम बौर बसन्ती।
कोयलिया आलापें बसन्ती, घटा बसन्ती छाई॥
माघ पंचमी सुदी बसन्ती, घर घर आज चाव बसन्ती।
पूजें ठाकुर फूल बसन्ती, भोग बसन्ती मिठाई॥
जामा पगिया पटुका बसन्ती, साड़ी ओढ़नी चोली बसन्ती।
बाल वृद्ध नर नारी बसन्ती, गावें बसन्ती बधाई॥
रितुराज की रानी बसन्ती, महामाया ने जाई बसन्ती।
'प्रेम' युगल की होली बसन्ती, विश्व बसन्ती माई॥

(५४)

सनातन मिश्र जी तुमको बधाई है बधाई है ।
महामाया महारानी बधाई है बधाई है ।।
यह तुमने कन्या जाई है, जगत ने जननी पाई है ।
यह माता कन्या, कन्या मा, बधाई है बधाई है ।।
छटा नखचन्द्र की सेवा, न पावें स्वप्न में देवा ।
वही आज गोद में तुम्हरी, बधाई है, बधाई है ।।
यह पारब्रह्म की ज्योति, यह विष्णु सीप की मोती ।
तुम्हारी दोनों मुट्ठी में, बधाई है वधाई है ।।
पतित जन पावनी आई, यह 'प्रेम' स्वामिनी आई ।
यह गौर चाँदनी आई, बधाई है बधाई है ।।

(५५)

आई आई बसन्त पंचमी आज, नदिया में बहार श्री आई ।।
तात सनातन सदन में आई, मात महामाया ने जाई ।
विष्णुप्रिया जु कहाई, नदिया में बहार श्री आई ।।
गौर चाँद की चाँदनी आई, भक्ति कुमुदिनी जन सुखदाई ।
कलि चोर कूं अति दुखदाई, नदिया में बहार श्री आई ।।
भूतल पै भू देवी आई, जगत पिता जग माता आई ।
बहार ए बसन्त वे निमाई, नदिया में बहार श्री आई ।।
त्याग तपस्या की मूरति आई, गौर 'प्रेम' त्रिवेनी आई ।
बार बार नमो नमो पाई, नदिया में बहार श्री आई ।।

गौर जन्म बधाई

(५६)

गौरचन्द्र को आज जन्मदिन हिलमिल होरी खेलो हो ।
नाचो गाओ हर्ष मनाओ, शोक दुक्ख पग पेलो हो ॥
नाम गुलाल मलो मुख ऊपर, हंसि हंसि गल भुजमेलो हो ।
भरि भरि नैनन की पिचकारी, नेह सरस रंग रेलो हो ॥
चाव भाव कमोरी लै लै, लाज के शीश उड़ेलो हो ।
अबीर आनन्द उड़ाओ प्रेम सौं, हरि हरि मुख सों बोलो हो ॥

(५७)

फूल फूल के बाजे बधाईयां, फूल माता शची ने जाइयां ।
फागुन पूरनमासी फूली, संध्या घड़ी शुभ राशि फूली,
फूल फूल के गौर हरि पाइयां ॥
फूले निताई अद्वैत फूले, फूले श्रीवास हरिदास फूले,
आशा लता फूल छाइयां ॥
बाट चलत बटोही फूले, गंगा न्हावत जन गन फूले,
फूल फूल के हरि हरि गाइयां ॥
नदिया बाग तडाग फूले, गंगा जल लहरावत फूले,
फूल फूल के फूल चढ़ाइयां ॥
सुर नर मुनि मिलि नाचत फूले, अबीर गुलाल उड़ावत फूले,
आनन्द 'प्रेम' जग छाइयां ॥

(५८)

अनोखो ही लाला जायो री तेरे कूंख को धन्य री माई।
तेरे कूंख नो धन्यरी माई, तेरे भाग को धन्यरी माई ॥
दस ही मास में बालक होवे, यह जग रीति सदाई।
चौदह मास में तुमने जायो, रीति अनोखी चलाई ॥
हमरे जब कोई बालक हौवे, गावें गीत लुगाई।
तिहारे लाल कौ जन्म भयौ जब, दुनियाँ हरि हरि गाई ॥
मात दूध कूं पायके बालक, रोवत चुप है जाय।
तिहारौ लाल तब ही चुप होवे, जब हरि धुन सुन पाय ॥
जैसे ढङ्ग अनोखे सब ते, रङ्ग हू अनोखो माई।
सोने की इक पूतरी मानौ, बिजुरी में लिपटाई ॥
और इक अचरज सबही को यह, लेत है चित्त चुराई।
आनन्द 'प्रेम' हिये उमगावे, नैनन रहे समाई ॥

(५६)

आज गौर हरि की होरी रे रसिया।
मासन में फागुन है रंगीलो, तिथिन में पूनो गोरी रे र ० ॥
नाम गुलाल उड़ाओ भरि भरि, बचै न कोई भोरी रे र ० ॥
मद की चूनरि चीर उतारो, चोली लाज देओ बोरी रे र० ॥
भेदभाव सब भूलो भुलाओ, नाचो भुज भुज जोरी रे र० ॥
प्रेमानन्द कठोर हियो अति, भीज्यौ तौउ न पसीज्यौ रे र० ॥

(६०)

चिरजीवो शची तेरो लाल, निमाई लाल, अति रसाल ॥
अङ्ग झगुली पीत पटकी, गौर अङ्ग शोभा छिटकी ।
निरखत जु नैन ठिठकी, अटकी रहीं, मटकी रहीं ।
अटकि रहीं अलक जाल ॥
कुन्द दशन किलक हसन, कुण्डल हलन लट लटकन ।
कजरे नैंन तुतरे बेन, रोम रोम छबि विशाल ।
कान्ति जाल रूप लाल ॥
युग युग तेरौ जीवै लाल, पुनि पुनि हम असीसें बाल ।
गावें 'प्रेम' आनन्द ख्याल, जय गोपाल, गौर गोपाल ।
निमाइ लाल कन्हाइ लाल ॥

(६१)

कन्हाई भयो निमाई हो भागबत में गाई ।
यह भागवत में गाई, यह तो गर्ग मुनि ने सुनाई ॥
सत युग में याको धौरो वरन हो, लाल हो त्रेता युग में हो,
यह द्वापर कारो कन्हाई ॥

कलि में याको गौर वरन है, कीर्तन यज्ञ रचायो हो,
यह कलि को ठाकुर भाई ॥
कृष्ण हो याने बंशी बजाई, गौरा हरि हरि गायो हो;
संकीर्तन धूम मचाई ॥
कृष्ण होय याने प्रेम ही लूट्यो, गौरा प्रेम लुटायो हो,
पायो जो ब्रज में माई ॥
कृष्ण होय याने गोपी रुलाई, गौरा आप ही रोयो हो,
हा कृष्ण कृष्ण कहाँ गाई ॥
कृष्ण होय याने रिन जो चढ़ाये, गौरा होय भुगतायो हो,
हरि नाम प्रेम लुटाई ॥
कृष्ण होय याने असुर संहारे, गौरा कंठ लगायो हो,
हरि बोल हरि बुलवाई ॥
कृष्ण होय यह रसिया साज्यो, गौर वैराग्य बतायो हो,
सन्यासी रूप बनाई ॥
दया सीम गुण सीम निमाई, भजो हरि हरि गाय हो,
जो चहो 'प्रेम' रस भाई ॥

गौर बाल रूप

(६२)

यह तो चित को चोरा आयोरी, तेरो गोरा लाल निमाई ।
तेरो गोरा लाल निमाई, तेरो भोरा लाल निमाई ॥
कञ्चन सों दमके अङ्ग झलमल, नख शिख अति सुघराई ।
गोरे गाल औ भाल सों छलछल, छलकि रही है लुनाई ॥
पल्लव लाल अधर मानो, द्वय रेखा सुन्दरताई ।
लाड चाव को गढ़ यह ठोड़ी, राखै मन अटकाई ॥
छबिहिं छोल छड़ी सी दोनों, बाहु विधना बनाई ।
द्वै दल कमल छोर में फूले, दस शशि झूलें आई ॥
सुन्दर के सब ही अति सुन्दर, पै अंखियां अधिकाई ।
एक बेर जो कोई लखि पावे, मन मखियां उरझाई ॥
युगल चरन की शोभा मनहर, रसना कहे कहा गाई ।
निरखि निरखि प्रेम मन मधुकर, रह्यौ तहां लिपटाई ॥

(६३)

शची जु कौ छैया, हमारे मन भाय गयौ ।
केशर तिलक भाल पर सोहै, घुँघरारी अलकैया ॥
नासामणि अति सुन्दर राजै, मंद मंद मुसकैया ।
डगर डगर में करत कीरतन, हरि हरि नाम लुटैया ॥
'सूरज' शरन तिहारी आई, कीजै बेगि सहैया ।

(६४)

हरि हरि अद्भुत चरित निमाई।
अद्भुत नाम हरि धुनि सुनत ही उछरत गोदी माई ॥
अद्भुत दंतुली दूध धार सी हंसत कुन्द कुम्हिलाई।
अद्भुत लाली हस्त चरण तल बाल रवि छवि छाई ॥
अद्भुत सेत नील नयनांचल बरबस नेह भुराई।
अद्भुत तुतरावन मधु घोलन चित वित लेत चुराई ॥
अद्भुत लघु लघु चलन धरन पर छवि सरिता बह जाई।
अद्भुत प्रेम प्रदीपमणि शची मन्दिर दीपत माई ॥

(६५)

मैं बलि जाऊँ या बाल रूप पै, खेलत गौर निमाई।
संग शिशु सब एक वयस के, ऊधम धूम मचाई ॥
अंग झगुलिया आछे काछे, धूरि रही लिपटाई।
अलक घटा मधि चन्द्रछटा मुख, चमकत मोहन माई ॥
भरि भरि करन धूरि उछारत, बचत न लोग लुगाई।
घेरि घेरि बहु भांति चिरावें, हरि हरि बोल बुलाई ॥
काहू के पाछे लगि धावें, तारी बजावत जाई।
काहू के पट आसन छीनें, देवें हरि बुलवाई ॥
किलकत झगरत मारत दौरत, डरत तनक नहिं माई।
नदिया नगर के धन्य डगर की, प्रेम कना रज चाई ॥

(६६)

बाल गौर मधुर मनोहारी ।
कण्ठमाल कंचन को सोहे, रंगहू कंचन मनोहारी ॥
चांचर केश जूड़ा करि बांध्यो, तापर माला मनोहारी ।
घर बाहर आंगन गलियन में, नाचत गावत मनोहारी ॥
रूप मधुर अति बोल मधुर अति, नृत्य मधुर अति मनोहारी ।
धन्य प्रेम नदिया नर नारी, लखत गौरचन्द्र मनोहारी ॥

वैराग्य

(विश्वरूप-गृहत्याग)

(६७)

यह हृदय एक हरि को, यामें भाग न काहू को ॥
धर्ममें भाग है, धनमें भाग है, हृदयमें नहीं है भाग काहूको ।
दयामें भाग है, दान में भाग है, प्रेममें नहीं है भाग काहू को ॥
नहिं धन नहिं जन विद्या सों, वेद पाठ सों नाईं ।
एक त्याग ही सों मिले, अमृत पद सुखदाई ॥
त्याग मूल है धर्म को, सेवा मूल है त्याग ।
त्याग ही लक्षण प्रेम को, बड़ो भाग है त्याग ॥
जो राखै सो खोय है, जो खोवै तो पाय ।
उलटो पंथ है 'प्रेम' को, मरै अमर बन जाय ॥

(६८)

उड़ चल हंसा अमर लोक को, यह तो देश न तेरा है ।
चुग ले दाना पी ले पानी, कर ले रैन बसेरा है ॥
माया का जहां नाच नहीं है, स्वारथ की जहां आँच नहीं है ।
प्रीति में जहां कांच नहीं है, मोती सांच घनेरा है ॥
विरह का जहां बान नहीं है, काया का जहां भान नहीं है ।
रस का जहां परिमाण नहीं है, आनन्द प्रेम हरि डेरा है ॥

(६९)

हरि बोल हरि हरि बोल हरि ॥
हरि ज्वाला हरें हरि शान्ति करें ।
बस शेष जीवन यह नेम करें हरि० ॥
बीज जहां तहां फल होवे ।
चाहे आज होवे चाहे कल होवे ।
बस ऊसर में भी फल होवे हरि० ॥
भूल में तो वे दूर ही थे ।
भूल ही में हम दूर ही थे ।
जब भूल मिटी प्रेम पास ही थे हरि ० ॥

(७०)

अपनी सांझ भई और जग वालों का हुआ सबेरा ।
सजले सिङ्गार सोलह सुन्दरी जाना है साजन का डेरा ॥
श्याम सिङ्गार श्याम ही साजन श्याम ही तेरा डेरा ।
श्याम के रंग में रंग ले चोला मिट जाय मैं और मेरा ॥
जग के मीत जगत के मनुआ वहाँ कोई मीत न तेरा ।
यहां वहां के मीत श्याम से दे ले प्रेम तू फेरा ॥

व्याहुलौ

(७१)

छबीलो मेरो बरना व्याहन जाय ॥
मेरे बरना के शिर मुकुट बिराजे, शिर मुकुट बिराजे ।
चितवन चित्त चुराय, मेरो बरना व्याहन जाय ॥
मेरे बरना के गले मणि मोती-लर मणि मोती-लर ।
चूमत चरनन जाय, छबीलो मेरो बरना व्याहन जाय ॥
मेरे बरना के होठ पान की लाली पान की लाली ।
बोलत फूल झराय, छबीलो मेरा बरना व्याहन जाय ॥
मेरो बरना मानो कमल मधुमय, कमल मधुमय ।
मधुकर रहे मंडराय, छबीलो मेरा बरना व्याहन जाय ॥
मेरे बरना के मन लागी चटपटी लागी चटपटी ।
बरनी को ललचाय छबीलो मेरा व्याहन जाय ॥
मेरो बरना छवि रूप पिटारी छवि रूप पिटारी ।
कोटिन काम लजाय छबीलो मेरो बरना व्याहन जाय ॥
मेरो बरना देव गौर रंगीलो देव गौर रंगीलो ।
रंग प्रेम बरसाय छबीलो मेरो बरना व्याहन जाय ॥

(७२)

मेरो बरना बड़ो शरमीलो बड़ो शरमीलो
गुन गरवीलो माई ।
या बरना में मोहनी रूप धरि मोहनी रूप धरि
छले असुर शिवराई ।।
या बरना में मिथिला अवधपुर मिथिला अवधपुर
ब्याही न ब्याही बौराई ।
या बरना ने दण्डक बन में दण्डक बन में
तपसिन दियो सरसाई ।।
या बरना ने मुरली बजाय मुरली बजाय
व्रज की नारी रमाई ।
या बरना ने सोलह हजार सोलह हजार
नारी एक संग ब्याही ।।
या बरना ने अब नदिया में अब नदिया में
मोहे लोग लुगाई ।
यह बरना देव युग युग छलिया युग युग छलिया
बरनों छलन को जाई ।।

(७३)

भुवन चतुर्दश छाई जय जय ॥
विश्वम्भर वर वरहिं विलोकन, निकसि चले जन गाई ।
तजि कैलाश पार्वती शिव, डमरू बजावत गाय जय जय ॥
तजि पाताल शेष गण सह, फनन फुंकरि गाय जय जय ।
तजि वैकुण्ठ विष्णु गण सह, गायें शंख बजाय जय जय ॥
तजि लोक ब्रह्माणी सह, चारों मुख सों गाय जय जय ।
तजि लोक देव इन्द्र शची सह, सहसनयन चले गाय जयजय ॥

(७४)

हे गौर विश्वम्भर शची दुलारे, बूझत नदिया नारी ।
संशय अपनों सुनाबत तुमकूं देत नहीं हम गारी ॥
पुत्र पिता दोउन में कहिये कौन सो है जगन्नाथा जू ।
बाप के नाम पै तुम जग बोलो आवत नाहिं लाजा जू ॥
तुम सों सुन्दर भूतल नाहिन तुम तो सुरपति आये जू ।
इन्द्राणी शची, पत्नी कूं तुम कैसें मात बनाये जू ॥
माया पति तुम माया कन्या कैसे दुलहिन बनाये जू ।
द्वै द्वै नारी व्याही तुमनें भले प्रेम निबाहे जू ॥

(७५)

ये कारे हैं जू कारे, गोरी ने गौर कर डारे।
ये बाहर के ही गोरे, भीतर कारे के कारे ॥
ये बाहर के ही सूधे, भीतर सौं त्रिभंगी टेढ़े।
ये रिनियां हैं जू रिनियां, याही सों नीची अंखियां ॥
ये घोष हैं व्रज के घोष, अब विप्र बनन की हौंस।
ये ऐसे हैं शरमीले, तेरह मास पेट में खेले ॥
ये तो ऐसे बेशरमीले, ये तो नाचत नदिया डोले।
ये तो चोर पुराने चोर, अब हू वही चोर के चोर ॥
ये आये नहीं यहां व्याहन, आये हैं नारी चुरावन।
पण्डित नहीं अनारी, तभी आये चुरावन नारी ॥
इन्हें गारी दै हम हारीं, इन पै सर्वसु लै हम वारी।
ये गारी सुनें सो सारे, प्रेम गौर हरि के प्यारे ॥

श्री मधुसूदनदेव स्तुति

(गया-गमन-लीला)

(७६)

ओ३म् जय मधु सूदन देव ओ३म् जय मधुसूदन देव।
जग हित नाना रूप अवतारी पार न पावें देव ॥
पूरब में जगन्नाथ विराजें पश्चिम में द्वार - केश।
दक्षिण में पद्मनाभ जनार्दन यहां मधुसूदन देव ॥

हरिद्वार में श्री हरि राजें मथुरा केशव देव ।
वृन्दावन गोविन्द विराजैं यहां मधु सूदन देव ।।
वद्री खण्ड में वद्री नारायण कावेरी रंग देव ।
मरु खण्ड श्री नाथ विराजैं यहां मधु सूदन देव ।।
त्रिवेणी में वेणी माधव गया गदाधर देव ।
तिरुपति में वाला जी राजें यहां मधु सूदन देव ।।
वरदराज कांची में कहिये पण्डरपुर विठलेश ।
डाकौर में रण छोड़ विराजैं यहां मधु सूदन देव ।।

श्री चरण स्तुति

(७७)

रमा उर रमैया ए शिव उर वसैया ।
धराधर नपैया ए वलि कर छलैया ।
अहिल्या तरैया ए भव सिन्धु नैया ।
कन्हैया के पैंयां नमस्ते नमस्ते ।।
ए दारिद दरैया ए कल्मष धुवैया ।
ए मन्मथ मथैया ए इच्छा नशैया ।
ए अघ गिरि जरैया ए सुरसरि बहैया ।
कन्हैया के पैंयां नमस्ते नमस्ते ।।

ए वन वन फिरैया ए फन फन नचैया ।
ए दर दर डुलैया ए माखन चुरैया ।
ए टेड़े द्वय पैंयां हैं प्रेम रमैया ।
कन्हैया के पैंयां नमस्ते नमस्ते ।।

गोपीनाथ स्तुति
(जगन्नाथ-दर्शन-लीला)

(७८)

जय जय खीर चोर गोपीनाथ ।
कुलिया खीर चुराय भक्त हित राखे लुकाय आप ।।
आज्ञा भई पुजारी कूं निशि, भूखो जन मम आज ।
जाय खीर तुरत दै आओ, धाय दियौ जन हाथ ।।
खीर खाय पुरी नीर बहाय, कुलिया लीनी बांध ।
जग कीरति भय प्रातः पलाये, आये वृन्दावन मांझ ।।
टूक टूक कुलिया नित खाये, प्रेम प्रभु बलिजात ।
भक्त हेत हरि चोर ओ साहु नाना रूप दिखात ।।

साक्षी गोपाल स्तुति

(जगन्नाथ-दर्शन-लीला) (७९)

ओ३म जय जय साक्षी गोपाल ।

यमुना नीर तजि खार सिन्धु तट, आय विराजे हो लाल ॥
विप्र भक्त जब जाय पुकारयो, तुव दरबार दयाल ।
तुरत रीझ ताके संग धाये, आये पग पग चाल ॥
पग नूपुर झनकारत छम छम, मोहन शब्द रसाल ।
सुनि सुनि धुनि विप्र मन माने, आवत पाछे चाल ॥
सौ दिन पथ पाँयन चलि आये, कहा कहिये यह ख्याल ।
जानि जीत विप्र मुनि देख्यौ, बनि गये विग्रह बाल ॥
महिमा भक्त भक्ति प्रघटाये, निज जन किये निहाल ।
जैसे तुम नन्दलाल निराले, तैसी निराली चाल ॥
जो जगन्नाथ के दर्शन आवै, साखि भरौ तत्काल ।
पुण्य हीन जन प्रेम दीन की, रहियो साक्षी गोपाल ॥

जगन्नाथ स्तुति

(जगन्नाथ-दर्शन-लीला) (८०)

ओ३म् जय जय जगन्नाथ ।

दारु ब्रह्म रूप सों प्रगट, अद्भुत छवि दरसात ॥
आस पास राम कृष्ण भैया, मध्य सुभद्रा सुहात ।
गोपी प्रेम प्रभाव वश ह्वै, खोये पांव औ हाथ ॥

एक दिवस श्री द्वारिका मध्य, पटरानिन की समाज ।
गोपी प्रेम कथा जु सुनावति, श्री रोहिणी वल मात ॥
द्वारे सुभद्रा जु ठाड़ी कीन्हीं, आन न पावें भ्रात ।
हरि हलधर दोउ राजसभा सों, दौरि आये अकुलात ॥
द्वारे सुभद्रा आड़ी आई, ठाड़े भगिनी भ्रात ।
ज्यों ज्यों कथा कहति उत रोहिणी, इत तीनों पिघलात ॥
कर चरन मुख नैन नासिका, तन मन सब गरि जात ।
इन्द्रिन भेद मिट्यो अंगन को, प्रेम पिण्ड भयौ गात ॥
रूप अनूप सो नारद देखे, मांग लिये ढिग नाथ ।
सोइ रूप तब दारु रूप में, प्रगट किये जगन्नाथ ॥
गोपी गोपी नाथ प्रेम की, लीला अकथ अगाध ।
विन्दु प्रेम प्रभु पद याचत, और नहीं जिय साध ॥

निताई निमाई मिलन

(८१)

कहां घनश्याम प्यारा है, कहां वह मुरली वाला है ।
बता दो नदिया वासियो, यहीं मेरा श्याम आया है ॥
न गोकुल में पता पाया, न मथुरा में नजर आया ।
न वृन्दावन दरस पाया, यही मेरा श्याम आया है ॥
लतायें हिलती और कहतीं यही वह श्याम आया है ।
ये पंछी नाचते गाते, यही मेरा श्याम आया है ॥

पवन से भी महक मीठी, यही कहती वह आया है ।
यह गंगा जल का रस मीठा, यही मेरा श्याम आया है ।।
दिशाओं से ध्वनि कहतीं, यही धन तेरा आया है ।
कनायें रज की भी कहतीं, चरण हमने ही पाया है ।।
बताओ या बताओ ना, मिलाओ या मिलाओ ना ।
न नदिया छोड़ जाना है, यही अब प्रेम भाया है ।।

(८२)

क-क-क कन्हाइ कहाँ भाई तू रे ।।
कहाँ तेरो मोर मुकुट, कहाँ मुरली रे ।
कहां तेरो श्याम बरन, गौर काहे तू रे ।।
व्रज में मेरो मोर मुकुट, नदिया करताल रे ।
व्रज में मेरी मुरली तान, नदिया हरि बोल रे ।।
व्रज को खेल बन बन में, विहरन है भाई रे ।
नदिया में नाचि नाचि, हरि हरि हरि गाई रे ।।
कहाँ तेरो रास रंग, गोपिन संग भाई रे ।
नटनागर भेष अपनो, काहे कूं दुराई रे ।।
व्रज को रास गोपिन संग, रहसि रंग भाई रे ।
नदिया में प्रगट रास, संकीर्तन भाई रे ।।
व्रज में प्रेमभोगी बड़े, हम तुम दोउ भाई रे ।
यहाँ तो प्रेमयोगी वन, रोवें हरि हरि गाई रे ।।

प्रेम विरह

(गया-गमन)

(८३)

वंशी बजाय बन बुलाय, रास रचाय कहां गये।
मूरति श्याम नयनाभिराम, हाय दिखाय कहां गये॥
चंचल नैन रंस के ऐन, मधुर बैन रस के दैंन।
मोहन मैन ललित वेनु, हाय सुनाय कहां गये॥
प्राण ललन हृदय रमन, जीवन धन प्रेम शरन।
वृन्दाबनचन्द कृष्णचन्द, देओ दरश कहां गये॥

(८४)

प्रीतम वसै जिहिं देश में, प्यारी तहाँ की पौन।
प्रेम छटा आये बिना, यह सुख समझत कौन॥
कियो नहीं जाने प्यार कबहू, वह प्यार की बातें जाने कहा।
छोटी सी वस्तु हू प्यारे की तो, प्राण से प्यारी लागे महा॥
भेष हू प्यारे को प्यारो लगे, अरु देश हू प्यारे को प्यारो लगै।
वा देश की वायु हू प्यारी लगे, वा भूमि की धूरि हू प्यारी लगे॥
वा देश को सपनों ही सुक्ख महा, वा देशमें मरनों ही लाभ महा।
वा देश को सपनो ही मन्त्र महा, वा प्रेम बिना जीवन ही कहा॥

प्रेम विरह
(गया से आगमन)

(८५)

नैना सों नैना मिला के, प्यारी छवि दिखला के,
अब बोलो कहाँ भागे ॥ नैना० ॥
कित ढूंढूं कित जाऊँ, कित श्याम पिया पाऊँ,
मत भूलो मोहे पिया, प्रेम के झीने धागे,
बंध गईं मैं आके ॥ नैना० ॥
मैं तो रंगा के कफनी, बन जाऊँ प्रेम जोगिनी,
मोहि ले चलो री कोई, जहाँ बसत निरमोही,
मनाऊँगी मैं तो जाके ॥ नैना० ॥
वह मानें तो मनाऊँ, न माने तो मनाऊं,
मोकूं नांहि और ठाऊं, परी रहूं प्रेम पाऊं,
जगाऊंगी अलख गा के ॥ नैना० ॥

(८६)

जा श्याम ने मोहनी मुरली बजाई ।
वह श्याम मेरौ कहाँ रह्यो लुकाई ॥
जा श्याम ने मोहि बन में बुलाई ।
वह श्याम मेरो कहाँ रह्यो लुकाई ॥

जा श्याम ने कुल कानि सब छुड़ाई।
वह श्याम मेरो कहाँ रह्यो लुकाई ॥
जा श्याम ने छवि सपने लखाई।
वह श्याम मेरो कहाँ रह्यो लुकाई ॥
जा श्याम ने प्रेम अग्नि जराई।
वह श्याम मेरो कहां रह्यो लुकाई ॥

प्रेम विरह
(परिवर्तन-लीला)

(८७)

हरि पद रज जो पाऊं, नैनन लाऊँ ॥
जा वन में मेरो कान्ह विहारी पैयां पैयां धावै।
वंशी बजाय गराय के पाहन, पद पद चिन्ह बनावै।
सो रज मैं शीश चढ़ाऊं, ब्रज में जाऊं ॥
जा बन में मेरो रासबिहारी थेई थेई कर नाचे।
एक बूंद जा सुख के आगे, तीन लोक सुख कांचे।
यमुना पुलिन में जाऊं, रज में नहाऊं ॥
जा बन में मेरो कुञ्जबिहारी, संग महारानी राजे।
पग पग प्रेम प्रयाग बनावे, बहावे रसहिं अगाधे।
तहां तरु तरु ढिग जाऊं, हृदय लगाऊं ॥

(८८)

आओ हे आओ हे, दीनन बन्धु आओ हे।
दीनन बन्धु करुना सिन्धु, वदन इन्दु दिखाओ हे ॥
हम बल हारे दुखिया सारे, दीन हीन तुम ही कूं पुकारे।
तिहारी कृपा की बाट निहारे, प्रेम विन्दु पिवाओ हे ॥

(८९)

वाजै वाजै री कन्हैया की वंशी वाजे री।
मन में वाजै कि वन में वाजै, कहाँ कहाँ ये वंशी वाजे री ॥
तन मन वन सब गूंज रह्यौ है, राधा राधा ही राधा गाजे री।
पग न चलत अब तन हलत कछू, प्रेम नैनन में जल राजे री ॥

(९०)

हरि प्रेमी का मग न्यारा है, हरि प्रेमी का मग न्यारा है ॥
नहिं वेद पुराण में गाया है, जिन पाया हृदय छिपाया है।
ज्यों मोती सीप में धारा है, हरि प्रेमी का मग न्यारा है ॥
कभी प्यारे के गुण गाते हैं, कभी ध्यान में ही रह जाते हैं।
कभी बहती आंसुन धारा है, हरि प्रेमी का मग न्यारा है ॥
कभी मरने को उठ धाते हैं, दरश आश ले फिर आते हैं।
अब आवे कान्ह पियारा है, हरि प्रेमी का मग न्यारा है ॥
पागल पागल जग कहता है वह रोता है जग हँसता है।
नहीं प्रेम का कोई इजारा है, हरि प्रेमी का मग न्यारा है ॥

प्रेम विरह
(कृष्णलीलानुकरण)

(६१)

कृष्ण पिया को ढूंढन आई, मैं तो ॥
गोकुल ढूंढी, मथुरा ढूंढी, वृन्दावन में आय विरमाई, मैं तो ॥
घर में रहूँ तो घर नहीं भाये, जाऊं जो बन तो छिप छिप जाई, मैं तो ॥
काज करूं तो करन न देवे, वंशी मधुर देत बजाई, मैं तो ॥
प्रेम प्रभु पर तन मन वारे, सुन्दर सलौनो श्याम सुखदाई, मैं तो ॥

(६२)

श्री वृन्दावन तो यही है, श्री वृन्दावन तो यही है।
जहाँ श्याम की वंशी बाजे, श्री वृन्दावन तो यही है ॥
यह हरियाली तरु वेलिन की, सब वन से अति ही निराली है।
हरि रंग है इनमें छाया हुआ, श्री वृन्दावन तो यही है ॥
यह जल थल अरु सुमन पवन में, महक भी सबसे निराली है।
हरि अंग सुगन्धि छाय रही, श्री वृन्दावन तो यही है ॥
यह पंछी कुल की कलरव भी, सब पंछिन सों निराली है।
हरि नाम युगल रट लाय रहे, श्री वृन्दावन तो यही है ॥
गो गोप गोपी जन की भी, छवि कुछ ऐसी निराली है।
हरि रूप है इनमें छाया हुआ, श्री वृन्दावन तो यही है ॥
व्रज के थिर चर सब ही की, प्रीति भी ऐसी निराली है।
हरि प्रेम है उर में छाया हुआ, श्री वृन्दावन तो यही है ॥

प्रेम विरह

(सन्यास-ग्रहण) (६३)

नयन मनमोहन प्राणाराम, मेरी सुध लीजै हे घनश्याम ।।

विरह आंच बाढ़ी अति, तन मन जर जर जाय ।

मुख-रस-घन दरसाय के, नेह मेह बरसाय ।

हाय नहीं टेर सकौं लै नाम ।। मेरी सुध० ।।

घाट औघट आय पड़ी, बाट सबै छिटकाय ।

मोरि मुख चहुँ ओर ते, तोसों ही जोरचौ आय ।

हाय मुख मोरै मत मेरे प्राण ।। मेरी सुध० ।।

नैन दुखी तुम्र दरस बिन, देत छिन ही छिन रोय ।

नैनन के दुख हरन को, तुम बिन और न कोय ।

कहां तुम छिप गए हो प्रेम चाँद ।। मेरी सुध० ।।

(६४)

यह दुख नहीं सुख सार है, कहो श्याम श्याम श्याम,

प्राणा राम राम राम ।।

जा श्याम ने वंशी बजाई, घर बार में अग्नि जराई ।

वह चोर धनी वह श्याम, कहो श्याम श्याम श्याम ।।

जा श्याम सों अंखिया फूटीं, वही श्याम है अंजन बूटी ।

वही प्राण संजीवन श्याम, कहो श्याम श्याम श्याम ।।

जा श्याम सों तन मन ज्वाला, वही श्याम मेरी वन माला ।

जप-माल वही मंत्र श्याम, कहो श्याम श्याम श्याम ॥
वह श्याम ही संसार धारा, वह श्याम ही नौका किनारा।
डुबावे बचावे वह श्याम, कहो श्याम श्याम श्याम ॥
गोविन्द गोपाल गिरधारी, माधव मुकुन्द मुरारी।
प्रेम गोपीजन-बल्लभ श्याम, कहो श्याम श्याम श्याम ॥

प्रेम विरह

(जगन्नाथ-वास-अनुमति) (६५)

प्रीति की ज्वाला को जाने।
जाके उर में दव सुलगत है, रोम रोम सोइ जाने ॥
प्रीति अक्षर द्वै मध्य में, अमृत विष दोउ साने।
इक मारत पुनि एक जियावत, हार न कोई मानै ॥
नैन बैन उर गस्यो पियाको, आन भाव बिसरानै।
प्रेम प्रभु की यह निपट उदासी, प्रीतम मुख मन आनैं ॥

(जगन्नाथ-गमन) (६६)

मेरो मीत मेरे संग डोले ॥
हाथ पकड़ वह चले सदा ही,
गिरि गिरि जाऊं तो लेत उठाई।
अब पकड़ा के हाथ उसे मैं, नाचत करत किलोले ॥
मेरे तन को पोंछ वह देवे, नैनों से नैना वह जोवे।
मैं रोऊं तो वह हू रोवे, बोलत मीठी बोले ॥

कौन कहे नहिं कोई हमारा, है है है वह मीत पियारा ।
देख देख वह खड़ा प्रेम है, कब से तुझको बोले ।।

प्रेम विरह
(जगन्नाथ-गमन)

(६७)

हमें भी साथ लेते जा, अरे मतवाले सन्यासी ।
करेंगे हम तेरी सेवा, अरे मतवाले सन्यासी ।।
तेरी आंखों की धारायें, हमारे दिल को पिघलातीं ।
जरा दें पोंछ हाथों से, अरे मतवाले सन्यासी ।।
कहां फिरता है तू बन बन, फूल से नंगे चरणों से ।
जरा आंखों से सहला दें, अरे मतवाले सन्यासी ।।
यह रंग क्या तू ने पाया है, बाहर व भीतर रंगआया है ।
जहां से यह निराला है, अरे मतवाले सन्यासी ।।
न देखा है कभी तुमको, मगर लगता है क्यूं हमको ।
तू लाखों जान से प्यारा, अरे मतवाले सन्यासी ।।
जो यह सूरत दिखाई है, जो यह जादू चलाया है ।
न रखना बाकी अब सुध-बुध, अरे मतवाले सन्यासी ।।
अगर जाना ही है प्यारे, बस इतना तो बता जा रे ।
हम कैसे प्रेम में रोवें, अरे मतवाले सन्यासी ।।

(६८)

हरि तुम कैसे लीला-धारी ।

जग कूं नचाओ आप हू नाचौ, नाना स्वांग नित धारी ॥

धनुष हु छांड्यो मुरली हू छोड़ी, अब दण्ड-कमण्डलु-धारी ।

पीताम्बर वनमाला छोड़ी, अब भिक्षुक भेष जु धारी ॥

गोपिन कूं तब रोवत छोड़ीं, अब रोवें माता नारी ।

भक्तन कूं नित प्रेम रुलाओ, अब रोओ नदिया बिहारी ॥

गौर निताई दया

(६९)

हरि नाम सुनाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम ।

ओ घर घर जाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम ॥

हम भूल रहे थे बन में, बल खो बैठे थे तन में ।

ओ राह बताने वाले, ओ ज्योति जगाने वाले, तु० ॥

हम बैठ पड़े थे मग में, बस सो ही गये थे जग में ।

ओ आके जगाने वाले, ओ भेरी बजाने वाले, तु० ॥

हम लेकर विष का प्याला, जा रहे थे यम के गाला ।

ओ सुधा पिलाने वाले, ओ जीवन देने वाले, तु० ॥

हम पार तेरा क्या पावें, बस शीश झुका यही गावें ।

ओ प्रेम लुटाने वाले, ओ श्याम दिखाने वाले, तु० ॥

(१००)

जय निताई दयानिधे ! तेरी दया अपार ।
जय हे गौर प्रेमनिधे ! तेरा हृदय उदार ।।
कोई कहे हरि दयाकारी, कोई दण्डधारी ।
मतलब है सबका यही, तेरी दया अपार ।।
कोई पहुँचे तैर कर, तो कोई पहुँचे डूब ।
सबको पार करता है तू, तेरी दया अपार ।।
नीच ऊँच भले ओ बुरे, सब ही तेरे प्रेम ।
तेरी रीझ तू ही जाने, तेरी दया अपार ।।

(१०१)

क्या क्या न गौर तूने, अवतार ले दिखाया ।
पहले न जो दिखाया, वह तूने अब दिखाया ।।
भले हैं या बुरे हैं, यह जीव सब तेरे हैं ।
हृदय लगा कर सबको, हरि का हृदय बताया ।।
न ज्ञान गीता गाया, न चक्र ले डराया ।
माता ही बन कर सबको, छाती का पय पिलाया ।।
बुरा जो जितना हुआ, प्यारा वह उतना हुआ ।
चलते को छोड़ पहले, गिरते को ही बचाया ।।
न लोक बल दिखाया, न ईश बल दिखाया ।
नैंनों के गंगा - जल से, तूने जगत नहलाया ।।

भगवान् बन न बैठा भक्तों के रज पै लोटा।
हम में हमारा जैसा तूने ही बन दिखाया॥
पतितों को गंग धारा अन्धों को ज्योति धारा।
भक्तों को प्रेम धारा तूने बहा दिखाया॥

(१०२)

आज मिलि सब गाओ भाई, जय गौर हरि जय गौर निताई।
न ऐसो दानी दयाल दूजो, मिलैगो ठाकुर कलि में भाई॥
न देखें जाति न कर्म देखें, न देखें आयु न विद्या देखें।
न देखें पाप बस पापी देखें, गरे लगावें वे बन के भाई॥
न माँगें पूजा न धर्म दूजा, न योग यज्ञ न ज्ञान विद्या।
यही वे माँगें कि लाज तज के, कहो हरि हरि भुजा उठाई॥
न ज्ञानी प्यारे न ध्यानी प्यारे, न मानी प्यारे न दानी प्यारे।
हैं प्रेम प्यारे अधम हत्यारे, जो बोलें हरिबोल नयन बहाई॥

(१०३)

हरे राम कृष्ण नाम गान दान कारणीं।
शोक लोभ मोह ताप, सर्वविघ्न नाशिनीं॥
पाद पद्म लुब्ध भक्त बृन्द भक्ति दायनीं।
गौर मूर्ति माशु नौमि नामसूत्र धारणीं॥

(१०४)

जो गौर बनकर न कृष्ण आते, तो होता क्या और न होता क्या क्या ?
सिखाते जो नाम कीर्तन नहीं, तो होता क्या और न होता क्या० ?
कर्म की गाड़ी तो टूट चुकी है, ज्ञान का जहाज भी फूट चुका है।
जो बेड़ा नाम का न बांध देते, तो होता क्या और न होता क्या० ॥
सत्य का विस्तर तो बँध चुका है, शौच का टाँड़ा भी लद चुका है।
जो छत्र नाम का न तान देते, तो होता क्या और न होता क्या० ॥
ए हाथ पाँव तो टूट चुके हैं, औ आँख कान भी फूट चुके हैं।
जो नाम गोदी में न आप लेते, तो होता क्या और न होता क्या० ॥
तुम कैसे हो हम कहा तो जानें, काले गोरे कहा पहिचानैं।
जो नाम 'प्रेम' बता न देते, तो होता क्या और न होता क्या० ॥

(१०५)

भवसिन्धु अपार सुपारतरनकी मन में जो अभिलाष बड़ी है।
हरि संकीर्तन नाम सुधा रस पीवन की जो चाह खरी है॥
प्रेम सुधा सागर लहरी में मधुर किलोल चहो जो करी है।
शरन गहो चैतन्य चरन की मुख सों बोलो गौरहरी है॥